IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 2, February 2023
Impact Factor: 7.301

सावित्री बाई फुले का महिला व दलित उत्थान में योगदान

डॉ. मीना अम्बेश
सह आचार्य
बाबू शोभाराम राजकीय कला महाविद्यालय, अलवर

सारांश : प्रस्तुत शोध पत्र में सावित्री बाई फुले द्वारा महिलाओं की शिक्षा में योगदान और दलितों के उत्थान का अध्ययन किया गया हैं। उन्नीसवीं शताब्दी के शुरूआती सुधारवादी आंदोलन केवल पुरूषों द्वारा संचालित किए गए थे। ऐसे में जो नाम अपवाद के रूप में सामने आता है, वह है सावित्री बाई फुले। उन्हें अपने समय की एकमात्र महिला कहा जा सकता है, जिन्होंने अपने पति ज्योतिबा फुले के साथ मिलकर न केवल दलितों और महिला शिक्षा के उत्थान के लिए सफल प्रयास किए, बल्कि तत्कालीन सती प्रथा, बाल विवाह और अशिक्षा और विधवा के खिलाफ भी जमकर संघर्ष किया। विवाहित और निराश्रित महिलाओं के जीवन यापन के लिए आवास गृह स्थापित करने जैसे सामाजिक कार्य करते हुए वे क्रांतिकारी दिशा की ओर बढी। सावित्रीबाई फुले को भारत की पहली महिला शिक्षक, सामाजिक कार्यकर्ता, कवयित्री और वंचितों की एक मजबूत महिला आवाज माना जाता है।

शब्द कुंजी : भारतीय समाज में महिलाओं का महत्व, सावित्री बाई फुले की भूमिका, सावित्री बाई फुले एक शिक्षक और समाज सुधारक, सावित्रीबाई फुले का दलित उत्थान में योगदान, सावित्रीबाई फुले का महिला शिक्षा में योगदान और सावित्रीबाई फुले के सामाजिक कार्य।

परिचय

सावित्री बाई फुले का जन्म 3 जनवरी 1831 को हुआ था। उनके पिता का नाम खंडोजी नेवसे और माता का नाम लक्ष्मी था। उनका जन्म एक ऐसे घर में हुआ था जहां उनके पिता लड़कियों की शिक्षा के खिलाफ थे। सावित्री के जीवन में हुई एक घटना से इस बात की पुष्टि होती है, जब बचपन में एक बार वह जल्दबाजी में एक अंग्रेजी पुस्तक के पन्ने पलट रही थी, अचानक उसके पिता ने उसे ऐसा करते हुए देख लिया। उनके पिता द्वारा पुस्तक को छीन कर उसे खिडकी से बाहर फेंक दिया गया और इसे दोबारा नहीं पढ़ने के सख्त निर्देश भी दिए। उस समय सावित्री को पढ़ना भी नहीं आता था और न ही उसकी उम्र थी कि वह पढ़ाई के महत्व जैसे विषय की गहराई को समझ सके। लेकिन कहीं न कहीं इस घटना ने उसके मन में विद्रोह के बीच बो दिए थे, हालांकि वह उस समय चुप रही। सावित्रीबाई फुले का विवाह मात्र नौ वर्ष की आयु में 1840 में 13 वर्षीय ज्योतिराव फुले से हुआ था। संभवतः उनका विवाह इस धरती पर जन्म लेने के उद्देश्य को पूरा करने का पहला चरण था। बचपन से ही मौन सावित्री जो अपने पिता को पुस्तक रखने के लिए भी नहीं रोक सकती थी, महात्मा ज्योतिबा फुले की पत्नी बनकर समाज की पहली आवाज बन गई। ज्योतिबा फुले शिक्षा के प्रबल समर्थक थे और शिक्षा को महिलाओं के आत्मनिर्भरता और सामाजिक अन्याय से मुक्ति के लिए एकमात्र साधन मानते थे। यही कारण था कि सबसे पहले उन्होंने अपनी अनपढ़ पत्नी सावित्री को न केवल शिक्षित किया बल्कि उन्हें अन्य महिलाओं को पढ़ाने की जिम्मेदारी भी दी। यह निःसंदेह सावित्री बाई के लिए एक बहुत ही चुनौतीपूर्ण कार्य था। यह एक ऐसा समाज था जहां अधिकांश समाज महिलाओं को शिक्षित करने का विरोध करता था। उस समय केवल विवाह करना और लड़कियों के लिए घरेलू काम करना जरूरी होता है, उन्हें शिक्षित होने से कोई लेना–देना नहीं होना चाहिए। ऐसे संकीर्ण विचारों की जड़ों तक पहुंचकर, समाज की मानसिकता में गहरी पैठ केवल सावित्री बाई फुले जैसी वीरता ही उन्हें खोखला करने जैसा कठिन काम कर सकती थी।

पिछली दो शताब्दियों के महिला आंदोलन के इतिहास में सावित्री बाई फुले का नाम सर्वोपरि रूप से लिया जाता है। उन्होंने भारतीय समाज में विरोध की आवाज ऐसे समय में उठाई थी जब भारतीय महिलाओं को समाज में मूल लोकतांत्रिक अधिकार भी नहीं मिले थे। यह वह समय था जब महिलाएं पितृसत्तात्मक उत्पीडन और शोषण, उनकी आर्थिक निर्भरता और पुरूषों के अधीनस्थ सामाजिक जीवन का नेतृत्व कर रही थी। उन्नीसवीं शताब्दी के शुरूआती सुधारवादी आंदोलन केवल पुरूषों द्वारा संचालित किए गए थे। ऐसे में जो नाम अपवाद के रूप में सामने आता है, वह है वीरांगना सावित्री बाई फुले। उन्हें अपने समय की एकमात्र महिला कहा जा सकता है, जिन्होंने अपने पति ज्योतिबा फुले के साथ मिलकर न केवल दलितों और महिला शिक्षा के उत्थान के लिए सफल प्रयास किए, बल्कि तत्कालीन सती प्रथा, बाल विवाह और अशिक्षा और विधवा के खिलाफ भी जमकर संघर्ष किया।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 2, February 2023
Impact Factor: 7.301

सावित्री बाई फुले ने जाति और धर्म की संकीर्णता से ऊपर उठकर देश की सभी दलित, शोषित और उत्पीडित महिलाओं के जीवन के लिए काम किया। महिलाओं की चेतना में सावित्रीबाई फुले के सफल प्रयासों ने आज विशेष रूप से शिक्षित मध्यवर्गीय महिलाओं को उन व्यवसायों और पदों में प्रतिष्ठित किया है जिनके बारे में उन्होंने कभी सोचा भी नहीं था।

सावित्रीबाई फुले का मानना था कि महिलाओं और शोषितों को शोषण, मुक्ति और विकास के लिए आत्मनिर्भर होने के जरूरत है जिसमें शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। फुले दंपति जीवनभर भी महिलाओं, शोषितों, पीड़ितों, दलितों, विधवाओं और बच्चों के उत्थान के लिए बिना किसी भेदभाव के काम करते रहे।

सावित्री बाई ने अपने सामाजिक और महिला सुधार आंदोलनों की शुरूआत उस समय की जब निम्न–सामाजिक सोच व अस्पृश्यता का वातावरण था। उन्होंने उस समय सभी जातियों की विधवाओं पर हो रहे अत्याचारों के खिलाफ भी जोरदार आवाज उठाई सावित्रीबाई फुले और ज्योतिबा फुले ने अपने घर से सामाजिक सुधार के लिए अपने सभी परिवर्तनकारी कार्य शुरू किए और समाज के लिए आदर्श प्रस्तुत किए। उन्होंने खुद एक विधवा ब्राह्मण महिला, काशीबाई के एक बच्चे को गोद लिया और अपने दत्तक पुत्र यशवंत राव को डॉक्टर बनाया और अंतरजातीय विवाह करके जाति और वर्ग से परे एक शिक्षित और सुशिक्षित समाज की स्थापना करने के अपने महान विचार रखे।

सावित्री बाई फुले एक शिक्षक और समाज सुधारक होने के साथ–साथ एक कवि और प्रकृति प्रेमी भी थी। उनका लेखन अद्वितीय था। उनकी पहली पुस्तक 'काव्य फुले' 1854 में प्रकाशित हुई थी। उनकी अधिकांश कविताएं महिलाओं की समस्याओं, शिक्षा, जाति और अधीनता के बारे में थी। उन्होंने प्रकृति पर कुछ कविताएं भी लिखी। यह 1891 में प्रकाशित उनके पति महात्मा फुले की जीवनी पर आधारित है।

सावित्रीबाई फुले व दलित उत्थान

भारतीय सामाजिक व्यवस्था में महिलाओं और शूद्रों को अधिकारों से वंचित रखा गया है। साजिश के तहत कई जगहों पर वर्णित धार्मिक ग्रंथों में उनके अधिकारों पर प्रतिबंध लगाया गया है। तुलसी रामचरित मानस में, ''ढोल गवार शुद्र पशु नारी, ये सब है ताडन के अधिकारी द्वारा शूद्रों व महिलाओं की दयनीय अवस्था को व्यक्त करने के लिए पर्याप्त है।

सावित्रीबाई फुले के समय में इन धार्मिक और रूढ़िवादी परंपराओं की मान्यताओं के कारण, महिलाओं और दलितों की स्थिति अमानवीय थी, जो आज कमोबेश मौजूद है। समकालीन समाज में, महिलाओं की शिक्षा पर प्रतिबंध, सती प्रथा, बाल विवाह, देवदासी प्रथा, विधवा महिलाओं का शारीरिक और मानसिक शोषण और शूद्रों की शिक्षा पर प्रतिबंध, शूद्रों को सार्वजनिक स्थानों और कई तरह से रूढ़िवादी परंपराओं का उपयोग करने की अनुमति नहीं है।

सावित्रीबाई फुले ने रूढ़िवादी सामाजिक परंपराओं को तोड़ने और महिलाओं और अतिशूद्रों, शूद्रों के जीवन स्तर में सुधार के लिए पहल की। उन्होंने अपने पति की मदद से 1852 में 'महिला मंडल' का गठन किया। महिलाओं और शूद्रों को शिक्षित करने के लिए, 1 जनवरी 1848 को, पुणे के बुधवर पेठ में पहला गर्ल्स स्कूल खोला गया, जिसमें उन्होंने एक शिक्षक के रूप में पढ़ाना शुरू किया।

उन्होंने यह सब उस समय किया जब महिलाओं और शूद्रों को पढ़ाने पर प्रतिबंध था। उसके कार्यों का समाज ने कड़ा विरोध किया, लेकिन वह सामाजिक कार्यों में लगी रही। उन्हें अश्लील गालियाँ दी गईं। उन पर गोबर, मिट्टी और पत्थर फेंके गए लेकिन उसने सामाजिक कार्य करना बंद नहीं किया। वह स्कूल जाते समय अपने साथ एक साड़ी भी ले जाती थी ताकि स्कूल जाने से गोबर से ढकी साड़ी को बदला जा सके। बड़े पैमाने पर सामाजिक कार्य करने के लिए, 1849 में, पूना, सतारा, अहमद नगर ने मिलकर 18 स्कूलों की स्थापना की।

रूढ़िवादी परंपराओं और धार्मिक मान्यताओं के खिलाफ, सामाजिक सुधार के विचारों को पकड़ना और उन्हें निभाना आसान नहीं था। समाज के दबाव में ससुर ने उनके घर से निकाल दिया गया। सामाजिक कार्यों के कारण उनके विरोधियों ने उनके जीवन को मारने की कोशिश की लेकिन वह अपने कार्यों के लिए अड़े रहे।

सावित्रीबाई फुले व महिला शिक्षा

सावित्री बाई फुले ने 1848 में पुणे में अपने पति के साथ मिलकर विभिन्न जातियों की केवल नौ लड़कियों के साथ पूना में पहला गर्ल्स स्कूल स्थापित किया, जहाँ वह खुद पहली शिक्षिका बनीं। इसके अलावा उन्होंने महिला शिक्षकों की एक टीम भी बनाई, कहा जाता है कि फातिमा शेख नाम की एक महिला ने इस टीम में उनका पूरा साथ दिया। सदाशिव गोवंदे ने इस पहले नारीशाला के लिए पुस्तकों का प्रबंधन किया। सावित्री बाई खुद इतनी अच्छी शिक्षिका थीं कि कुछ ही दिनों में उनका स्कूल पूना में एक उत्कृष्ट स्कूल बन गया। इसलिए उसके बढ़ते महत्व के कारण, कुछ लोगों ने फिर से अत्याचार करना शुरू कर दिया, जिसके कारण सावित्री को कुछ समय के लिए अपना स्कूल बंद करना पड़ा। लेकिन उनकी दृढ़ इच्छाशक्ति, अपार शक्ति और अदम्य उत्साह ने जल्द ही एक नई जगह एक नए स्कूल की शुरुआत की।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 2, February 2023
Impact Factor: 7.301

निश्चित रूप से, सावित्री बाई ने उस दौर में महिला शिक्षा के लिए विद्रोही कदम उठाए, उन्होंने इसे सहन करने के लिए अत्यधिक प्रतिरोध सहन किया। जब वह पढ़ाने के लिए स्कूल के लिए निकलती तो उन पर कीचड व पत्थर फेंककर अपमानित किया जाता था।

सावित्री बाई ने तत्कालीन महिलाओं से संबंधित हर पहलू का गहराई से अनुभव किया और अपने समाधान स्थापित किए जो न केवल शिक्षा तक सीमित थे, बल्कि कई सामाजिक विसंगतियों से भी संबंधित थे।

सावित्री बाई फुले का सामाजिक कार्य

महिलाओं की शिक्षा पर प्रतिबंध के अलावा, विधवा महिलाओं को तत्काल समाज में कई तरह से प्रताड़ित किया गया। विधवाएँ मुंडन करने के लिए बाध्य थीं। उन्हें परमानंद और सांस्कृतिक कार्यों में भाग लेने से मना किया गया था। घर के सदस्यों द्वारा उनका शारीरिक शोषण किया गया। समाज में महिलाओं की समस्याओं से दुखी होकर, सावित्रीबाई फुले ने महिलाओं और नवजात बच्चों की सुरक्षा के उद्देश्य से 28 जनवरी 1853 को शेल्टर होम मैटरनिटी होम खोला और उसका नाम चाइल्ड– मदर बैन होम रखा और बाद में एक अनाथालय की स्थापना की। प्रसूति गृह में, उसने 66 महिलाओं को भर्ती कराया था।

सावित्रीबाई फुले न केवल एक सामाजिक कार्यकर्ता और शिक्षिका थीं, बल्कि वे एक बहुत अच्छी कवियित्री भी थीं। उन्होंने दो काव्य संग्रह, काव्य फुले और बावनकशी सुबोध रत्नाकर लिखे हैं, जिसमें सहज सामाजिक रूप से परिवर्तनशील और वंचित वर्गों और महिलाओं को जागृत करने की बात करते हैं। उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से रूढ़िवादी सामाजिक परंपराओं का विरोध किया।

फुले दंपति ने 1873 में सामाजिक कार्यों के सुचारू संचालन के लिए 'सत्यशोधक समाज' संस्था की स्थापना की जिसके माध्यम से उन्होंने अंतरजातीय विवाह, विधवा संरक्षण, बाल सुरक्षा अंधविश्वास और मिथकों को तोड़ने और जन जागृति लाने का काम शुरू किया। फुले की मृत्यु के बाद भी ज्योतिबा ने काम करना जारी रखा।

निष्कर्ष

सावित्रीबाई फुले ने महिलाओं व दलितों के उत्थान के लिए अपना पूरा जीवन लगा दिया। लेकिन आज भी बहुत से लोग उनके बारे में नहीं जानते हैं। इसका कारण उन्हें पढ़ाए जा रहे पाठ्य पुस्तकों में शामिल नहीं करना है। जैसा कि हम समाज सुधारकों ने अपनी पाठ्य पुस्तकों में समाज सुधारकों के बारे में कई पुरुषों को पढ़ा, लेकिन उच्च सामाजिक सुधार कार्य करने के बाद भी सावित्रीबाई फुले का नाम नहीं लिया गया। इसके दो कारण स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं, एक महिला और एक पिछड़ी जाति से। वंचितों और महिलाओं की नायिकाओं को बदलते परिवेश में लंबे समय तक दबाया नहीं जा सकता है। सावित्री बाई फुले को एकमात्र ऐसी महिला कहा जा सकता है जिन्होंने अपने पति ज्योतिबा फुले के साथ मिलकर न केवल दलितों और महिलाओं की शिक्षा के उत्थान के लिए सफल प्रयास किए बल्कि तत्कालीन सती प्रथा, बाल विवाह और अशिक्षा और विधवा विवाह के खिलाफ भी जमकर संघर्ष किया। सामाजिक कार्य करते हुए जैसे उनके लिए एक आवास गृह की स्थापना की, वे क्रांतिकारी दिशा की ओर बढ़े। सावित्रीबाई फुले को भारत की पहली महिला शिक्षक, सामाजिक कार्यकर्ता, कवयित्री और वंचितों की एक मजबूत महिला आवाज माना जाता है।

संदर्भ सूची–

1. खुराना, के. एल.–मॉडेम इंडियन, 2002 लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा–3
2. मिशेल, एस. एम. (संपादक)–आधुनिक भारत में दलित, 1999–विस्तार प्रकाशन, नई दिल्ली
3. कोटनी, एच. (एडिटेड द्वारा)– कास्ट सिस्टम, अनटच चबिलिटी एंड द डिप्रेस्ड, 1997 प्रिंटेड ऑन राज करनाल इलेक्ट्रिक प्रेस, बी– 35/ 9 ळ.ज. करनाल रोड, दिल्ली 110033
4. घड़ियाल रेहाना (इसके द्वारा संपादित)–भारतीय समाज में महिलाएं एक पाठक ऋषि प्रकाशन, नई दिल्ली
5. जोशी, तारकीता लक्ष्मणश्रेष्ठ, 1997 पब्लिशिन डिवीजन, पटियाला हाउस, नई दिल्ली–110001
6. पवार, एन. जी.–महात्मा ज्योति राव फूले–भारतीय सामाजिक क्रांति के जनक 1999, पुस्तक एन्क्लेव जियान भवन, ओपी। छण्ण्ण्ण शांति नगर, जयपुर 302006
7. कीर, धनंजय–महात्मा ज्योति राव फुले–भारत क्रांति के जनक, 1997, लोकप्रिय प्रकाशन प्रा. लिमिटेड 35– सी पंडित मदन मोहन मोलविया मार्ग, तारदिओ, मुंबई–400034
8. पाटिल, प्रो. च्ण्ळण् महात्मा ज्योति राव फूले, खंड प्, शिक्षा विभाग, महाराष्ट्र सरकार, बंबई के 400032 के कोलियेटेड वर्क्स
9. भारत, 1996 में घेवर, जीएस जाति और जाति, लोकप्रिय प्रकाशन बॉम्बे
10. उपदेय, एच. सी. भारत में महिलाओं की स्थिति खंड प् 1991, अनमोल प्रकाशन, नई दिल्ली

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 2, February 2023
Impact Factor: 7.301

पत्रिकाओं

1. भारतीय आर्थिक और सामाजिक इतिहास की समीक्षा जनवरी–मार्च–2001. 37 नं। 1, ऋषि प्रकाशन नई दिल्ली
2. भारतीय समाजशास्त्र में योगदान मई–अगस्त–2001 2 ऋषि प्रकाशन नई दिल्ली

पत्र–पत्रिकाएं

1. भारतीय स्पेक्ट्रम
2. कूर्म क्षत्रिय जागरण–मासिक मुँह की चादर (क) नवंबर 1997 वर्ष 38 अंक 3, (ख) अप्रैल 1998, वर्ष 39, अंक 1 संपादक मदन मोहन पटेल–कूर्म क्षत्रिय जागरण–पटेल निवास 4–नवैया, गणेश गंज लखनऊ (यूपी)
3. सुबोध पत्रिका
4. दीनबंधु
5. दलित टुडे–संपादक वेद कुमार प्रकाशन–वेद कुमार, 18/455 इंदिरा नगर, लखनऊ (उ. प्र.)
6. मासिक पत्रिका–महाराष्ट्र मानस–महात्मा ज्योतिराव फुले स्मृति शताब्दी विशेषांक–16 फरवरी 1991 ।– अरुण पाटनकर संपादकीय पता–सूचना और जनसंपर्क, सामान्य कार्यालय, नया प्रशासन भवन, 17 वीं मंजिल, मुंबई 7. मासिक पत्रिकाएँ–हम दलित–संपादक–प्रेम कपाड़िया, सोशल एक्शन ट्रस्ट–10– इंस्टीट्यूशनलरिया, लोधी रोड, नई दिल्ली